डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 1 अगस्त 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-चौथा | अगस्त-2009 | मासिक पत्रिका

6 **धन्य अजायब**
सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी

7 **समय का सही इस्तेमाल**
महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

13 **तड़प**
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

31 **सवाल-जवाब**
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

45 **प्रेम-विरह**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

50 **दोष**
महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 556671**

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 9928 925304** उप सम्पादिका : **नंदिनी**

सहयोग : **रेणु सचदेवा, सुमन आनन्द, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह**

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

89

कृपाल गुरु दा विछोड़ा

कृपाल गुरु दा विछोड़ा मैंनू पै गया, दस्सां किनूं दु:ख फोलके

1. पिया कृपाल तेरी, जोत अलाही वे,
तुर गयों छड्डके तूं, मेरया माही वे,
अखियां नूं बिरहो विछोड़ा लै गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

2. होई ना पुरानी मेरी, सगना दी मेहंदी वे,
तेरया विछोड़या च, जिंद दु:ख सेहंदी वे,
मेरा सगन मुनारा ढह गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

3. बनया यतीम अज, ऐस मैं जहान दा,
रह गया सहारा, इको तेरे सच्चे नाम दा,
तेरे प्यार दे फुलां च भौरा रह गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

4. वासी सचखंड दा तूँ, आया विच जग दे,
पैंदी है झलक तेरी, विच रग-रग दे,
तन करके विछोड़ा पै गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

5. तेरे उत्ते जिंदड़ी, मैं घोल घुमाई वे,
तेरया विछोड़या च, हो गया सुदाई वे,
तेरे प्यार विच रोणां सदा पै गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

6. पीर दा विछोड़ा, तीर कालजे च वजया,
रखी कृपाल ने 'अजायब' दी आ लजया,
दिल लै गया ते पिंजरा रह गया,
दस्सां किनूं दु:ख फोलके (2)

धन्य अजायब

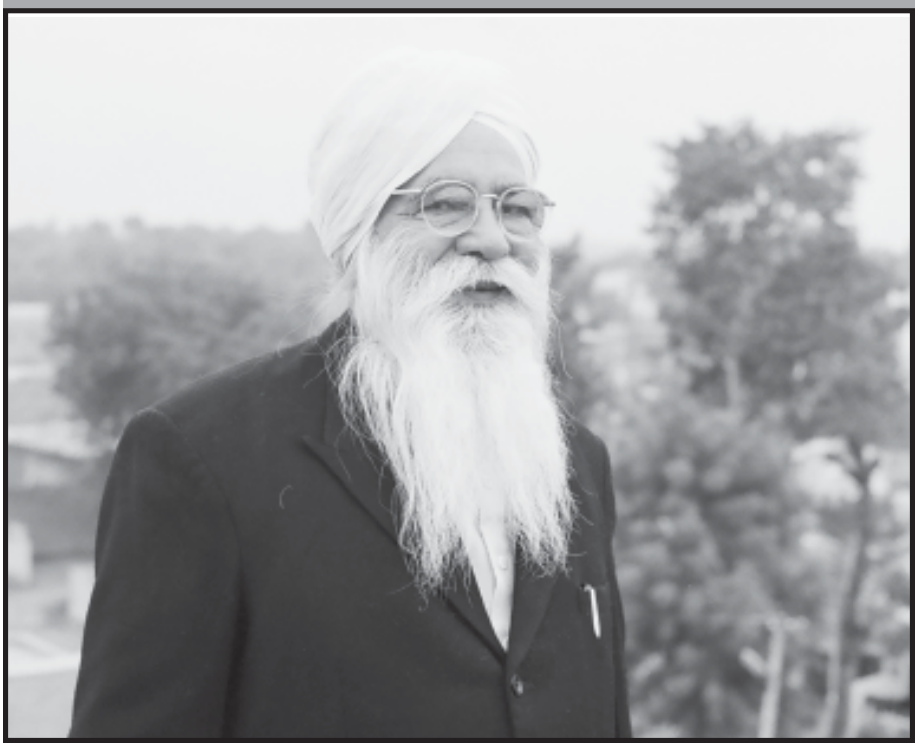

16 पी.एस. आश्राम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम

07, 08, 09, 10, 11 सितम्बर - 2009

23, 24, 25 अक्टूबर - 2009

27, 28, 29 नवम्बर - 2009

25, 26, 27 दिसम्बर - 2009

02, 03, 04, 05, 06 फरवरी - 2010

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

समय का सही इस्तेमाल

सावन आश्रम, दिल्ली

हम यहाँ केवल भजन-सिमरन करने के लिए आए हैं। हम यहाँ नए दोस्त बनाने के लिए नहीं आए। यहाँ आकर हमें अपने देश, घर और रिश्तेदारों को भी भूल जाना चाहिए। हमारा इरादा केवल भजन-सिमरन करने का होना चाहिए। यहाँ आकर हमें अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन-सिमरन में बिताना चाहिए। आप जितनी देर यहाँ हैं अपने **समय का सही इस्तेमाल** करें।

अपना कीमती समय भजन-सिमरन में लगाकर आप सभी सन्त बन सकते हैं। यह समय बहुत कीमती है इसे छोटी-छोटी चीजों के लिए बेकार न करें। जब समय बीत जाएगा तब आप पछताएंगे अगर आप पाँच मिनट में शरीर छोड़ने वाले हैं तो आप अपने आपको कैसे बचा सकते हैं? आप अपने ख्यालों को हमेशा सिमरन में रखें।

परमात्मा रोशनी है, परमात्मा नाम है। परमात्मा लोगों को रोशनी दिखाने के लिए आता है जिसे हम खुद नहीं देख सकते, यह सब गुरु की ताकत का ही चमत्कार है।

परमात्मा आपके अंदर है। आप मन, कर्म और सोच से शुद्ध रहें। आप अपने काम से मतलब रखें अगर आपको कोई अनुभव होता है तो आप चुप रहें। उन्हीं लोगों की बात सुनें जो अंदर तक पहुँचे हुए हैं, दूसरों की बातें सुनने से आप कहीं नहीं पहुँच सकते।

आपको उस ताकत के दर्शन होने चाहिए। हर सन्त का बीता हुआ कल होता है, हर पापी का आने वाला कल होता है; यह सीधी सी बात है। मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि एक आदमी उपदेश दे

सकता है कि वह रोशनी में है पर असलियत में वह अंधेरे में होता है। वही आदमी रोशनी के बारे में बता सकता है जिसने रोशनी को देखा है। आप अपना समय दुनियावी दोस्तों के बीच में बिताने की जगह पिता परमात्मा के साथ बिताएं जो आपको रोशनी दिखा सकता है।

राय सालीग्राम कहते हैं, ''यहाँ कितने पापी हैं? मैं उनमें सबसे बड़ा पापी हूँ।'' यह शब्द उनकी नम्रता दिखाते हैं। जो लोग जाग जाते हैं वे सन्त के दर्शन करते हैं। जो लोग सूर्योदय से तीन-चार घंटे पहले उठकर भजन-सिमरन करते हैं वे गुरु-परमात्मा के दर्शन का मजा उठाते हैं अगर आप सही हैं तो सारा संसार सही है। आप कह सकते हैं कि मेरे माता-पिता राजा-महाराजा हैं अगर आपके पास 'नाम' नहीं है तो कुछ भी नहीं है। आप भजन-सिमरन करेंगे तो आपका प्रतिबिम्ब मेरे ऊपर पड़ेगा।

आप अंदर जाएं फिर अपने आपको देखें। सन्त हमेशा अंदर जुड़ने के लिए कहते हैं। परमात्मा आपके अंदर हैं बाहर नहीं। परमात्मा आपके अंदर है लेकिन आप बाहरी दुनिया की तरफ देख रहे हैं। आप लोग बाहर के मन्दिर में क्यों जाते हैं? आपको अपने अंदर के मन्दिर में आराधना करनी चाहिए।

सभी सन्त यही कहते हैं कि आप परमात्मा को अपने शरीर के अंदर ढूंढें। आपके शरीर के अंदर एक मन्दिर है। बाहरी मन्दिर तो केवल आपको एक दिशा दिखाने के लिए हैं। परमात्मा ने कहा, ''मैं आपका सच्चा छुपा हुआ खजाना हूँ आप अपने अंदर खोज करें मुझे पा लेंगे।'' दुनियावी चिह्नो का इस्तेमाल करते हुए अपने अंदर खोज करें और सच को ढूंढें।

जो भी गुरु या सन्त चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों सबने हमें यही सिखाया है अगर आपके दोस्त अच्छे हैं तो आपके मन में धार्मिक या अच्छे विचार आएंगे अगर आपके दोस्त बुरे हैं तो आपके

मन में बुरे विचार आएंगे। ये ध्यान देने वाली बात है। अच्छे विचारों से आप अच्छी राह पर चलेंगे, आपको दूसरों से क्या लेना है?

आप सदैव अपने पर ध्यान दें, परमात्मा आपके अंदर है। आपके अंदर प्यार और 'नाम' का बीज है। आप जिस अमृत की बूंद के लिए इस दुनिया में आए हैं वह बूंद आपके अंदर है। जब आप परमात्मा के चरणों में आ गए हैं तो अपनी सारी चतुराई और दोहरेपन को छोड़ दें। रोम शहर के दो पुजारियों ने 'नामदान' लिया। उन्होंने पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए? मैंने उनसे कहा, ''चर्च आपको पैसे देता है, आप उनसे कहें कि यह परमात्मा का पंथ है।''

आप जैसे-जैसे आगे जाएंगे आपका मन स्थिर होता जाएगा। आप सिर्फ उसी की बात सुनें जो अंदर जाता है। गुरु आपको अंदर जाने का तरीका बताता है। आपके अंदर एक लहर है लेकिन यह तभी मुमकिन है जब आप सभी दुनियावी चीजें त्याग दें। आपको ध्यान देना है कि आपकी आँखें, कान और जुबान आपके अंदर बुरे विचार लाएंगे, इन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करें। बत्तख हमेशा पानी में रहती है लेकिन अपने पंखों को भीगने नहीं देती। आपको भी ऐसा ही होना चाहिए दुनिया में रहते हुए दुनियावी न बनें।

यह मेरी घड़ी है, किसी ताकत ने इस घड़ी को पकड़ा हुआ है, वह ताकत मैं हूँ। आप जब गुरु के चरणों में बैठते हैं तो समझें कि आप परमात्मा के चरणों में बैठे हैं। आप और आपका गुरु एक ही बिस्तर पर सो रहे हैं लेकिन आप एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे। जो लोग अंदर नहीं पहुँचे वे यहाँ-वहाँ की बातों को ही सही बताएंगे।

परमात्मा और गुरु ही आपके सच्चे दोस्त हैं। मन एक चालाक दोस्त है यह आपको धोखा देगा। आप मेरे पास आए हैं मैंने आपको अपने साथ नहीं परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए कहा है। सभी सन्त अपने आपको सबसे बड़ा पापी कहते हैं।

गुरु अमरदास जी कहते हैं, ''कभी मैं एक गिरा हुआ इंसान था जब मुझे 'नामदान' मिला तब मैं परमात्मा के चरणों में आ गया।'' जो अपने आपको नीचा समझता है वही सबसे ऊँचा होता है। आप आग के पास बैठेंगे तो आपको गर्मी मिलेगी अगर आप किसी पवित्र इंसान के पास बैठेंगे तो आपको कुछ आराम मिलेगा। जिन्हें गुरु मिल जाता है उनके कर्म कट जाते हैं, वे अपने आपको दुनियादारी से अलग समझें अगर आप दुनियादारी नहीं छोड़ते तो यही समझा जाएगा कि आप सतगुरु से नहीं मिले हैं और आप इस मार्ग पर चलने के लिए तैयार नहीं हैं।

गुरु को परमात्मा की तरफ से कमीशन मिली होती है गुरु हम सबको सच्चखंड ले जा सकता है अगर हम साफ नहीं तो वह ऐसा नहीं करता। आप लोग मेरे काम को आसान करें, मैंने आपको साफ-सुथरा करना है। आप लोग डायरी रखें, भजन-सिमरन करें इससे मेरा काम आसान होगा।

आपका घर जल रहा है और आप यहाँ-वहाँ भाग रहे हैं। अपने आपको ढूंढने की कोशिश करें। बाहर की तरफ न देखकर अंदर की तरफ देखें। जो अपना दृष्टिकोण बदल लेते हैं वही कामयाब होते हैं फिर आप देखेंगे कि आप परमात्मा के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

मैंने आपको सीधी और साधारण बात कही है। आप अपने **समय का सही इस्तेमाल** करें; मेरी बात मानने से आप अपना और मेरा काम आसान करेंगे। आप आज से ही अपना समय परमात्मा की डायरी में बिताएं अगर आप अपने ऊपर दया करेंगे तो मुझ पर दया करेंगे। क्या आप मेरी कही बातें मानने के लिए तैयार हैं?

©©©

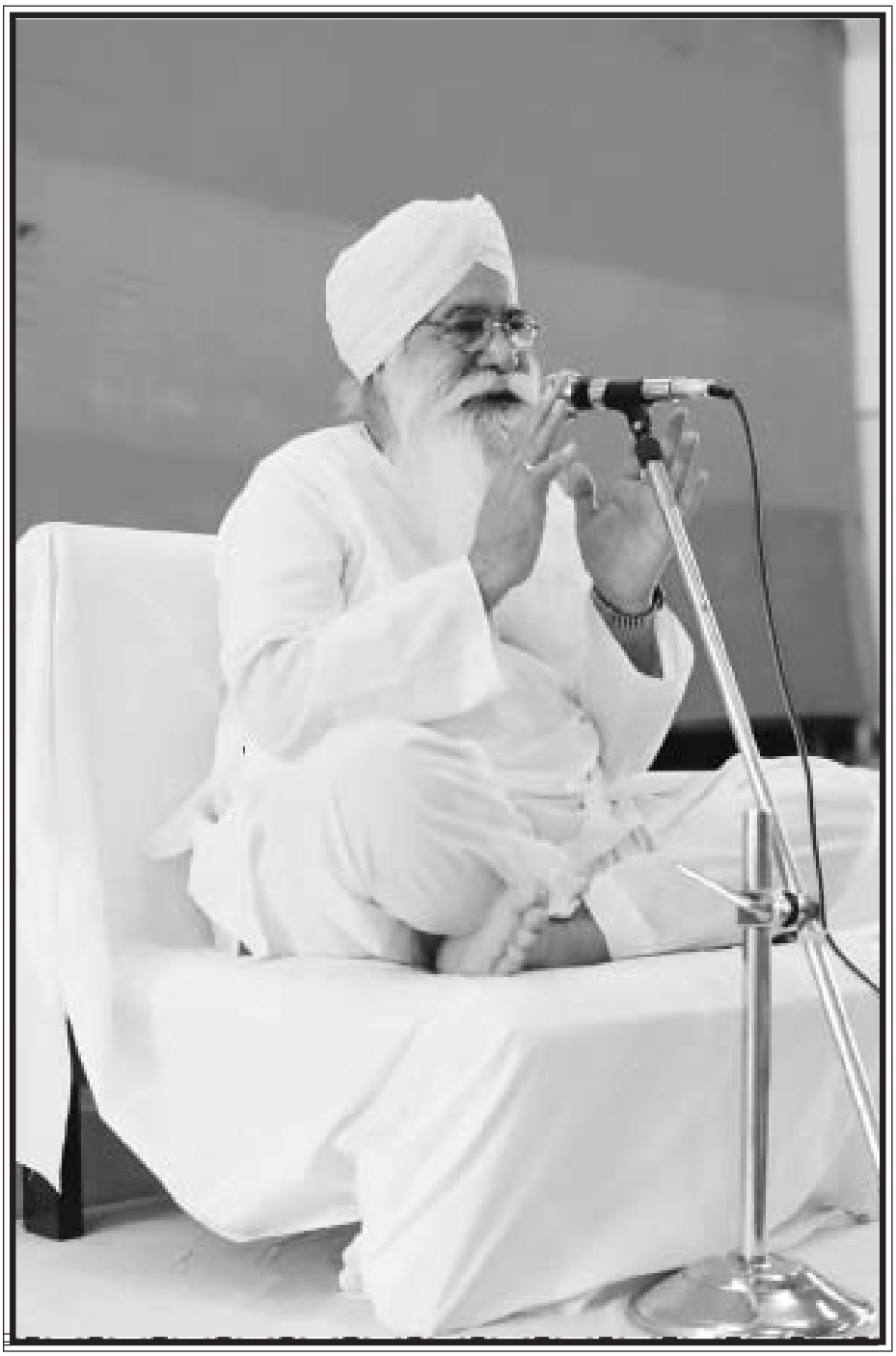

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तड़प

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने रहम करके हमारी गरीब आत्मा को अपनी भक्ति करने का मौका दिया। यह उन महान सतगुरुओं की दया है कि हम उनकी याद में बैठे हैं। आज के युग में हमारे ख्याल इतने फैल चुके हैं हम इस दुनिया में इतने व्यस्त हो चुके हैं कि जिस परमात्मा ने हमें संसार में भेजा है हम उसकी याद के लिए दो मिनट भी नहीं लगा सकते।

हमारा मन सोते हुए भी दौड़ता रहता है और जागते हुए भी दौड़ता रहता है। यह भक्ति करने का तरीका नहीं कि गुरु जाग रहा हो और हम सो रहे हों। हम कह देते हैं कि हम सभी परमात्मा की भक्ति करते हैं। यह सतगुरु परमात्मा सावन-कृपाल की दया है कि हम सभी उनकी भक्ति में जुड़े हैं। मिश्री को किसी तरफ से भी खाएं वह मीठी होती है।

चाहे आप गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, रविदास, मीराबाई की बानी पढ़े या फारस के महात्मा की बानी पढ़े तो हमें पता लगता है कि सब स्यानों की एक ही मत होती है; तीरअंदाज कितने भी हों निशान सबका एक ही होता है। सन्त-महात्मा किसी भी वक्त किसी भी समाज में आए सबका निशान एक ही था कि परमात्मा एक है और उससे मिलने का तरीका भी एक है।

महात्मा प्यार से बताते हैं कि आज तक परमात्मा न किसी को बाहर से मिला है न मिल ही सकता है। परमात्मा हर एक के अंदर है। हर कोई परमात्मा से मिलने का हकदार है ऐसा नहीं कि औरत परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकती मर्द कर सकता है या मर्द

परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता औरत कर सकती है। पिता को सारे बच्चे प्यारे होते हैं चाहे लड़का है या लड़की है क्योंकि पिता के अंदर ममता होती है।

परमपिता परमात्मा दयालु है हम सारी आत्माएं उसके बच्चे हैं। उसके अंदर हमारे लिए बहुत ममता है। वह इस ममता से बंधा हुआ ही संसार में आकर हमें अपना भेद अपने घर का पता बताता है अगर परमात्मा संसार में आकर अपना भेद नहीं बताता तो हम रोजाना जो किस्से-कहानियाँ मंदिरो, मस्जिदों में सुनते हैं वे प्रचलित न होते। परमात्मा फरिश्तों में फरिश्ता बना। देवताओं में देवता बना और नर श्रेणी में नर बनकर आ जाता है।

इंसान की बोली इंसान ही समझ सकता है अगर परमात्मा पशुओं की श्रेणी में आता तो हम उसकी बोली नहीं समझ सकते, उसके साथ इतना लगाव नहीं कर सकते थे इसलिए परमात्मा संसार में किसी न किसी इंसान वलि पैगम्बर के अंदर आता है। बेशक वह देखने में हमारे जैसा ही इंसान मालूम होता है हमारी तरह ही बोलता और खाता-पीता है लेकिन अंदर से उसका दृष्टिकोण हमसे अलग होता है। वह अंदर से कुछ और ही होता है जिस तरह एक पढ़ा-लिखा और एक अनपढ़ दोनों देखने में एक जैसे हैं लेकिन उनकी बुद्धि में बहुत फर्क होता है।

सन्त-महात्मा संसार में बहुत छोटा सा जीवन लेकर आते हैं। वे परमात्मा के हुक्म में आते हैं और परमात्मा के हुक्म के बगैर संसार में एक पल भी नहीं रहते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घल्ले आए नानका सद्दे उठ जाए।

हम लोग रोते हुए आते हैं और रोते हुए ही चले जाते हैं लेकिन महात्मा मालिक के हुक्म में आते और मालिक के हुक्म में ही चले जाते हैं। उन्हें इस दुनिया में रहने की न कोई खुशी है न यहाँ से जाने

में कोई गम है। जब हमारे दिल में **तड़प** पैदा होती है तब महात्मा आकर हमें प्यार का संदेश देते हैं।

मैं मिसाल दिया करता हूँ जैसे खानाबदोश किसी के बच्चे को उठाकर ले जाते हैं। पिता बच्चे की खोज में जंगलों-पहाड़ों में घूमता है आखिर उसे पता लगता है कि बस्ती के लोग उसके बच्चे को उठाकर ले आए हैं। वह अपने बच्चे की खोज में बस्ती वालों जैसा भेष धारण कर लेता है लेकिन बच्चा बस्ती वालों के बहकावे में आ चुका होता है। पिता बच्चे को प्यार भरी मीठी-मीठी बातें बताता है लेकिन वह बच्चा सुनने के लिए तैयार नहीं होता पर धीरे-धीरे संगत का असर होता है। हम जिसके साथ रोज बातचीत करें उससे प्यार हो जाता है।

आखिर बच्चे के दिल में पिता के साथ जाने की **तड़प** पैदा हो जाती है। पिता बच्चे को बताता है कि तू ऐसे ही झोपड़ियां में मारा-मारा फिर रहा है। तू बड़े घर का मालिक है महल में रह सकता है। बच्चे के दिल में अपने वतन की याद आ जाती है वह पिता की बात पर

ऐतबार करता है। पिता उसे उसके घर का पता ही नहीं बताता बल्कि उसे साथ लेकर चल भी पड़ता है कि यह तेरा घर है।

इसी तरह वह परमात्मा खुद इंसान का जामा पहनकर इस संसार में आता है। वह हमें बताता है कि वह प्यार का देश है वहाँ मौत नहीं पैदाईश नहीं। कोई किसी को दुःख नहीं देता। वहाँ इस दुनिया की तरह किसी के अंदर ईर्ष्या नहीं। हम जीव शुरू में उनकी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं होते अगर हमें उनकी पहचान होती! हम उनकी बातें मानने के लिए तैयार होते।

आप इतिहास पढ़कर देखें! संसार में चोटी के महात्मा आए लेकिन लोगों ने उन्हें किसी भी जगह आराम से नहीं बैठने दिया। उनकी निन्दा-चुगली की, जुल्म किए। जब वे मालिक का संदेश देकर चले जाते हैं तो उन्होंने जहाँ बैठकर दातुन की होती है हम उसे दातुनसर और जिस खुई का पानी पिया होता है उसे खुईसर कहने लग जाते हैं। उन्होंने जिस जगह पैरों में जूते पहने होते हैं हम उस जगह माथा टेकना शुरू कर देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बरमी मारे साँप न मुए त्यों निगुरे कर्म कमाहे।

जब तक महात्मा थे तब तक सब कुछ शोभा देता था। बाद में हम लोग उस जगह माथा घिसाने या यात्रा करने लग जाते हैं। ऐसा करने से हमें क्या फायदा हो सकता है? बुल्लेशाह कहते हैः

मेली बाजो मेला औतर

हम जिस मेली से मिलने गए अगर हमें वह नहीं मिला तो मेला फीका लगा। हम मंदिर में गए आगे राम ही नहीं मिला तो वह लेखे में नहीं; हम वहाँ से उदास होकर आ जाएंगे।

सन्त-महात्मा प्यार से समझाते हैं, ''देखो प्यारेयो! सच्ची मस्जिद, सच्चा मंदिर, सच्चा गुरुद्वारा आपका शरीर है। जब आप इसके अंदर

जाएंगे वह परमात्मा आपको जरूर मिलेगा क्योंकि वह इस मंदिर में खुद बैठा हुआ है। इस मंदिर की जानकारी देने के लिए ही महात्मा इस संसार में आते हैं।''

महात्मा पहले बनी कौम तोड़ने के लिए नहीं आते न कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं। वे हमारे नीले कपड़े उतरवाकर भगवे कपड़े पहनाने के लिए नहीं आते और न ही भगवे उतरवाकर सफेद पहनाने के लिए आते हैं। वे कहते हैं कि आप अपने समाज में रहें, अपनी बोलियां बोलें, जैसा आपके समाज का पहनावा है वैसा ही रखें। आप इस मंदिर में दाखिल होकर ही परमात्मा से मिल सकते हैं लेकिन कितने लोग इस मंदिर में जाने के लिए तैयार होते हैं?

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में यह कहानी सुनाया करते थे कि एक आदमी बाहर कौड़ी-कौड़ी माँगता फिरता है जबकि उसके घर में करोड़ो रूपये दबे हुए हैं लेकिन उसे पता नहीं कि मैं कितनी सम्पत्ति का मालिक हूँ। जब उसके घर का कोई भेदी मिल जाता है वह उसे बताता है कि तू अपने घर में इस जगह को खोद यहाँ बहुत खजाना, सोना-चाँदी दबा हुआ है। वह आदमी सोना प्राप्त करके उससे अच्छे मकान बनाकर रहना शुरू कर देता है तब वह किसका धन्यवाद करे? सोना-चाँदी तो पहले भी उसके घर में था लेकिन वह बेचारा कौड़ी-कौड़ी माँगता फिरता था। अब हम खुद कहगें कि वह सोना-चाँदी प्राप्त कराने वाले का ही धन्यवाद करेगा।

जब हम गुरु के चरणों में जाते हैं उनके बताए हुए उपदेश पर चलकर अंदर जाकर उस परमात्मा से मिल लेते हैं तब उस गुरु का सच्चा धन्यवाद करते हैं कि परमात्मा राम तो पहले भी हमारे अंदर था लेकिन उसके होते हुए हमने अनेकों दुख-सुख उठाए। अनेकों बार कीड़ो की तरह धरती पर रेंगे और जन्म-मरण के कष्ट से बच न सके। सहजोबाई कहती हैं:

राम तजूं पर गुरु न विसारूं, हरि को गुरु सम न निहारूं।
हरि ने जन्म दिया जग माही, गुरु ने आवागमन छुड़ाही।

मैं राम को भूल सकती हूँ लेकिन गुरु को नहीं भूल सकती। मैं हरि को गुरु के बराबर नहीं मानती। मैं हरि की निन्दा नहीं करती। हरि ने जन्म देकर मुक्ति के ऊपर बंधन लगा दिए कि आप ये कर्मकांड करेंगे तो शायद आपको परमात्मा मिल जाए लेकिन गुरु ने मुझे जन्म-मरण के चक्कर से छुड़ा दिया। कर्मकांड करने से आज तक न किसी को परमात्मा मिला है और न मिल ही सकता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटे।

कर्मकांड करने से हमारा मन खुश होता है कि हमने इस तरह का श्रेष्ठ कर्म कर लिया है इतने पंडितो, भाईयों को खाना खिला दिया है। इतने पैसे दान कर दिए है इतने अखबारों में छपवा दिया हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दाँये हाथ से दान करें तो बाँये हाथ को भी पता न लगे लेकिन जब तक हम अपनी जपजी लोगों को न सुना लें तब तक हमें शान्ति नहीं आती।''

अंग्रेजों ने एक दिन पाप-पुण्य के मुत्तलिक सवाल किया तो मैंने उन्हें प्यार से बताया कि हम लोग अखबार पढ़ते हैं उसमें हर आदमी अपने आपको सच्चा-सुच्चा कहता है कि मैंने कभी कोई बुरा कर्म नहीं किया; मैंने इतना दान किया है। सब अपने आपको दानवीर कहलवाते हैं लेकिन आज तक किसी ने भी अखबार में यह नहीं छपवाया कि मैंने इतने पाप किए हैं या इतनी चोरियाँ की हैं।

सन्त कहते हैं कि यह पाप और पुण्य की दुनिया है अगर हमारे पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्ग में होते अगर पाप ही पाप होते तो हम नर्कों में सड़ रहे होते। कुछ पुण्य और कुछ पाप मिले तो इंसान

का जामा मिला। इस जामें में बैठकर हम दुःख भी देखते हैं सुख भी देखते हैं। दुखों का आना हमारे पापों की सजा है, सुखों का आना हमारे पुण्यों का ईनाम है। किसी का लम्बे समय तक पाप का स्टाक रहता है वह लम्बे समय तक दुखी रहता है। किसी का लम्बे समय तक पुण्यों का स्टाक रहता है वह ज्यादा समय सुखी रहता है। आपको ऐसा कोई इंसान नहीं मिलेगा जो यह कहे कि मैंने सारी जिंदगी सुख ही सुख देखें हैं या दुख ही दुख देखे हैं। जिंदगी में थोड़ा बहुत सुख आता है फिर दुख आ जाते हैं यह धूप-छाँव की तरह है।

प्यारेयो! हमने अखबारों में अपने पाप के बारे में कुछ भी नहीं छपवाया फिर वह कौन सी ताकत है जो हमारा हिसाब-किताब रखती है? सन्त-महात्मा कहते हैं कि जिस प्रभु ने इतनी बड़ी दुनिया बनाई है इसका पालन-पोषण, इंतजाम या हिसाब-किताब किसी और को

नहीं सौंपा। उसने ऐसे विधान बनाए हैं जो अटल हैं अपने आप ही चलते रहते हैं जैसे समय पर सूरज चढ़ता है, समय पर मौत-पैदाईश होती है। पवन-पानी की दिशा कौन बदलता है? परमात्मा आपके बताए बिना ही सब कुछ जानता है। हमें यह वहम है कि वह सुनता नहीं हम सुनाएंगे तो वह सुनेगा या उसे पता नहीं हम बताएंगे तो वह देखेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलयां सब कुछ जांणदा किसपे करिए अरदास।

परमात्मा सब कुछ जानता है हमारे अंदर बैठा है, वह तराजू की तरह अंदर तोल रहा है। हम भूले हुए हैं कि वह देख नहीं रहा सुन नहीं रहा। जिनके अंदर **तड़प** पैदा हो जाती है वह सोने का नहीं सोने को प्राप्त करवाने वाले का धन्यवाद करते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि हर कौम का इंसान कहता है कि मैं गुरुमत पर चलता हूँ लेकिन हमारा जातिय तर्जुबा है कि जब तक पूर्ण गुरु नहीं मिलता हम उसके बताए हुए रास्ते पर नहीं चलते तब तक हमें नहीं मालूम कि गुरुमत क्या है?

आप प्यार से कहते हैं जिनके दिल में **तड़प** पैदा हो जाती है वे सबसे पहले उस वस्तु की खोज करते हैं। जिसे प्यास लगी है वह पानी की तलाश करेगा। जब पानी मिल जाता है वह यह नहीं पूछता कि यह पानी हिन्दू मुसलमान या ईसाई का है उसे पता है कि यह पानी मेरा जीवन है वह पानी पीकर तृप्त होता है। इसी तरह जिनके दिल के अंदर **तड़प** उठती है कि मैं परमात्मा से मिलूं, वह परमात्मा कहाँ है किस तरह का है? वह दिन-रात तड़पता फिरेगा।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जब हमारे दिल में परमात्मा से मिलने की **तड़प** पैदा हुई तो हमने उसे मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों में ढूंढ़ा। वहाँ जाकर कथा कहानियाँ और वर्ण आश्रम शास्त्र सुने।''

ग्रन्थ और पोथियों में महात्माओं की विरह और मिलाप की कहानियाँ हैं। इन्हें पढ़ने से हमारे अंदर **तड़प** पैदा होती है जिस तरह पानी पानी करने से हमारे अंदर प्यास बढ़ जाती है लेकिन बुझती नहीं। गुरु साहब कहते हैं:

दर्शन की प्रभ प्यास।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमारे दिल में **तड़प** पैदा हुई क्योकि वेदों-शास्त्रों को पढ़कर यह ज्ञान होता है कि इन वेदों-शास्त्रों में महात्माओं ने हमारे लिए क्या लिखा है, हमारे अंदर क्या कमियां हैं हम उससे क्यों नहीं मिल सकते?'' जब प्यास उठती है तो हम किसी महात्मा से जाकर मिलते हैं:

रूप रंग न रेख ठाकुर अविनाश।

मैं बहुत से महात्माओं के पास गया हूँ। जब उनसे ऐसे सवाल करते हैं तो वे कहते हैं भाई! परमात्मा का कोई रूप, रंग नहीं परमात्मा अविनाशी है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

सो स्वरूप सन्तन कथे विरले योगिश्वर।
कर किरपा जाको मेले धन धन ते ईश्वर।

परमात्मा रूप रंग से न्यारा है। जो धुन सच्चखंड से उठती है वह सब खंडो-ब्रह्मांडो को ताकत देती है। आप उसे स्वरूप कह लें! ताकत कह लें! परमात्मा की आवाज, कलमा, रब्बी बानी, धुर की बानी किसी भी नाम से पुकार लें! महात्मा आपको उस शब्द के साथ जोड़ देते हैं। परमात्मा जिस पर कृपा करता है उसे महात्मा के चरणों में भेज देता है उसके अंदर **तड़प** पैदा करता है। हमारे अंदर तड़प पैदा होती है तभी हम जाकर 'नाम' की इच्छा प्रकट करते हैं।

जिसके दिल के अंदर **तड़प** पैदा हो जाती है उसे न रात को नींद आती है न दिन में चैन आता है। उसे उठते-बैठते, चलते-फिरते चैन

नहीं आता। वह चाहता है कि मुझे कहीं से भी मिले! आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द है गौर से सुनने वाला है:

कैसी करूँ कसक उठी भारी मेरी लगी गुरु संग यारी।
दमदम तड़पू छिनछिन तरसूं चढ़ रही मन में विरह खुमारी।

आप प्यार से कहते हैं, ''जिन आत्माओं में ऐसी **तड़प** होती है वे धुर से बनी बनाई आती हैं लेकिन संसार में आकर मर्यादा पूरी करती हैं। जब वक्त आ जाता है जोकि मालिक की तरफ से मुकर्र होता है कि इन्होंने कितनी खोज करनी है। दुनिया को डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए इनसे कितनी मेहनत करवानी है। ऐसी आत्माएं संसार में ही पैदा होती और फलती-फूलती हैं लेकिन इन पर अमीरी-गरीबी या दुनिया के बंधनों का असर नहीं होता।''

जिनके दिल के अंदर इस तरह की कसक पैदा हो जाती है उनके अंदर बचपन से ही ऐसी मस्ती होती है कि मुझे वह कब मिलेगा? उन्हें ऐसा महसूस होता है कि मेरी कोई वस्तु खोई हुई है? वे हमेशा ही अपने मन में खालीपन देखते हैं जब तक उस खालीपन में वस्तु नहीं पड़ती जिसकी उनके दिल में भूख है **तड़प** है तब तक वे किस तरह सोएंगे?

अगर आपका किसी के साथ मामूली सा भी प्यार है जब तक आपको वह नहीं मिलता आपके अंदर कितनी **तड़प** होती है हालांकि यह दुनियावी रिश्ता है फिर भी **तड़प** होती है? उन महान आत्माओं के पास दुनियावी रिश्तेदार तो होते हैं लेकिन उन्हें उनके मिलाप से कोई खुशी नहीं होती।

मृग की नाभि में कस्तूरी होती है। जब कस्तूरी की खुशबू फैलती है तो मृग को यह पता नहीं चलता कि यह खुशबू मेरी नाभि के अंदर है। वह बेचारा उस खुशबू को बाहर झाड़ियों में ढूंढता फिरता है।

ज्यों कस्तूरी मृग न जाने ओह भ्रम दा भ्रम भरमाया।

मृग की **तड़प** और बढ़ जाती है। इसी तरह वह प्रेमी आत्मा यह नहीं देखती कि यह मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारा है। यहाँ पंडित या मौलवी कथा करता है। उसे तो एक ही लगन होती है कि मुझे ऐसी हस्ती मिले! मेरी खोई हुई वस्तु मिले! जब तक उसे वह वस्तु नहीं मिलती तब तक उसे मस्ती सी चढ़ी रहती है।

सुलगत जिगर फटत नित छाती उठन लगी हिय से चिंगारी।

प्यारेयो! अगर आपने ऐसी कसक देखी हो तो आपको पता लगे कि छाती किस तरह फटती है! आप किसी मलेरिया बुखार वाले को देखें! मलेरिया बुखार होने पर पहले सर्दी लगती है सर्दी से शरीर में कँपकपी उठती है। एक-दो लोग उस मरीज को दबाते हैं। वह कँपकपी अंदर से ही उठती है इसी तरह प्रेमी के अंदर भी ऐसा ही झाला उठता है। छाती जलती है जैसे बुखार वाला पल-पल पर पानी पीता है, उसके सीने में दर्द होता है कि कोई मलहम लगाने वाला वैद्य मिले!

नैनन नीर बहत जस नदिया डूब मरी माया मतवारी।

मैंने पहले बताया था कि ऐसी आत्मा के ऊपर गरीबी-अमीरी का असर नहीं होता। जब अंदर याद ताजा होती है दिल जलने लगता है अंदर आँखे अपने आप ही बहने लगती हैं। प्यारेयो! अगर कोई हमारा प्यारा मित्र बिछुड़ जाए या संसार छोड़ जाए तो उस समय कोई आकर हमें कहता है कि आप रोएं, उदास होएं? हम दुनिया की खातिर कितना रोते और तड़पते हैं। हमें चार भाई-बहन चुप भी करवाते हैं लेकिन अंदर इतनी **तड़प** होती है कि हम चुप नहीं करते।

इसी तरह प्रेमी के अंदर भी याद आते ही आँखों से अपने आप पानी बहने लगता है; यह उसके बस की खेल नहीं। आप मीरा बाई का इतिहास पढ़कर देखें!

ठंडी आह उठे पल पल में छाए गई अब प्रीत करारी।

ऐसी प्रेमी आत्मा के दिल से ठंडे हौंके उठते हैं। मैं पंजाब की मिसाल बताया करता हूँ कि वहाँ मेरा एक आढ़ती था। वह बहुत अच्छा था। उसकी पत्नी गुजर गई। उसने अपनी जिंदगी बहुत अच्छी बिताई, काफी धन जोड़ा। उसका लड़का सट्टा लगाने लगा। सट्टे में घाटा पड़ गया। हम वहाँ नरमा(कपास) लेकर गए हुए थे। उसका लड़का जिन दलालों के साथ सट्टा करता था वे भी दुकान का हिसाब-किताब चुकाने के लिए आ गए कि अब तू दुकान से बाहर हो जा। उस आढ़ती ने अपने लड़के से कहा कि मैंने बहुत मुश्किल से यह धन जोड़ा था। तेरी माता के गुजरने के बाद मैंने बहुत मुश्किल से समय बिताया। तूने मेरा जोड़ा हुआ सारा ही धन बर्बाद कर दिया है। इतना कहते ही हमारे देखते-देखते वह गिर गया।

आप सोच सकते हैं! इसका नाम ठंडी आह है। हम दुनिया के धन के लिए तो मरने के लिए तैयार हो जाते हैं जबकि हम हिम्मत करके फिर कमा सकते हैं! क्या कभी हमारे दिल में परमात्मा से मिलने के लिए भी ऐसी ठंडी आह निकली है? क्या हम कभी **तड़पे** हैं? प्रेमी के दिल से ऐसी ही ठंडी आहें उठती हैं।

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे काल करम पचहारी।

यह विरह तोड़ने से नहीं टूटती। मेरा जातिय तर्जुबा है सबसे पहले तो परिवार वाले इसे तोड़ने की पूरी कोशिश करते हैं कि यह किसी न किसी तरह टूट जाए।

गुरु नानकदेव जी की इस विरह को तोड़ने के लिए उनके माता-पिता ने बहुत जोर लगाया। गुरु नानकदेव जी तो दुनिया का उद्धार करने के लिए आए थे लेकिन आपके परिवार वाले आपके यार-दोस्तों से कहते थे कि तुम इसे घर के कारोबार में, व्यापार में लगाओ।

आप सोचकर देखें! यह उस डोरी को तोड़ने के उपाय थे। ऐसा सबकी जिंदगी में होता है। किसी के साथ ज्यादा और किसी के साथ कम होता है लेकिन जिनके अंदर सच्ची प्रीत जाग जाती है वह न तोड़ने से टूटती है न वे छोड़ ही सकते हैं।

सुरत निरत दोऊ कासद कीन्हें बिथा लिखूं अब सारी।

आमतौर पर थोड़ा सा कष्ट आया या थोड़ा बहुत प्यार उठा तो उस समय प्रेमी लोग पत्रों की झड़ियां लगा देते हैं कि पर्दा खोलें। मेरा कष्ट दूर करें, मैं और किससे कहूँ? हमारे अंदर सुरत-निरत दो ताकते हैं। सुरत का काम सुनना, निरत का काम देखना है। हम जब तक दसवें द्वार में नहीं जाते तब तक सुरत-निरत काम नहीं करती।

पिछले जमाने में कौए पत्र लेकर जाते थे फिर लोग यह काम कबूतरों से लेने लग गए। आर्मी में काफी कबूतर रखे जाते हैं उन्हें सिखाया जाता है कि कैसे पत्र लेकर जाना है। आर्मी में हर एक साधन से काम लिया जाता है। आज भी जब मुंडेर पर कौआ बोलता है तो हम कह देते हैं कि कोई आने वाला है अगर कोई सज्जन-मित्र आ जाए तो हम कहते हैं कि आज कौआ बोला था।

सुरत-निरत को संदेश देने वाला कागज बना लिया। सुरत का काम सुनना है निरत के जरिए संदेश भेजना है। अब सुरत गुरु का जवाब सुनती है कि अंदर से परमात्मा का क्या जवाब आता है? पहले जो जवाब आया क्या हमने कभी उसे सुना है? गुरु शिष्य का चिट्ठी-पत्र तो यह है कि आप दोनों आँखों के दरमियान आएं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाएं वहाँ सुरत और निरत जाग जाते हैं इनके जरिए संदेश भेजें फिर सुनें! अंदर बैठा गुरु जवाब दे रहा है या नहीं, वह हमारी बात सुनता है या नहीं?

पतियां भेजूं गुरु दरबारा अब लो खबर हमारी।

हम कागजों में अपने रोने रोते हैं। कोई कहता है, ''मैं दुखी हूँ मेरा मन करता है कि मैं आत्मघात कर लूं।'' सन्त-सतगुरु कहते हैंः

आत्मघाती महापापी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आत्मघाती को गुरु उल्टा लटका देता है माफ नहीं करता।'' परमात्मा ने हमें जो जीवन दिया है उसे खुशी-खुशी पूरा करना हमारा पहला धर्म है। हमने पत्र में यह व्यथा लिखनी है, ''हे सतगुरु! मैं दिन-रात तड़पता हूँ। मेरे अंदर तेरे बिछोड़े की आग जल रही है। मुझे जन्म-मरण का दुख है, तूं वैद्य है।'' प्यारेयो! सारे पर्दे उतारकर गुरु के दरबार में पहुँचकर ही विनती करनी है। आप वहां अपने दिल का पत्र दिखाएं वह खुद ही पढ़ लेगा आपको बताने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

नगर उजाड़ देश सब सूना तुम बिन जग अंधियारी।

हे सतगुरु! यह नगर जिस शरीर में मैं रह रहा हूँ इसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने लूट लिया है उजाड़ दिया है। तू ही यहाँ प्रकाश करके मुझे बचा सकता है। तेरे बिना मुझे यहाँ बचाने वाला कौन है?

कौन सुने और कौन सँवारे सब मोहे दीन निकारी।

मेरी इस फरियाद को कौन सुनेगा कौन मेरी इस दर्द भरी कहानी पर तवज्जो देगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

माता भी झूठी पिता भी झूठा, झूठे ही फल लग्गे हैं।

प्यारेयो! कौन हमारी फरियाद सुनकर हमें बचाएगा? जो बचा हुआ है वही हमारी फरियाद सुनेगा। वह हमें कहता है, ''इससे बचने की एक ही दवाई 'भजन-सिमरन' है।''

बही जात नैया मझधारा तुम बिन कौन उभारी।

मेरी जिंदगी की नाव भवसागर में गोते खा रही है। तेरे बिना कौन इसे पार लगाएगा! तेरे बिना कौन इसे बचाकर ले जाएगा!

खेवटिया क्यों देर लगाई क्यों कर करूं पुकारी।

हे सतगुरु! अब मैं कहाँ पुकार करूं! तूं ही मल्लाह है। तू ही इस जहाज को चलाने वाला कैप्टन है। सभी लोग इस रोग से ग्रसित हैं। तू ही मुझे बचाकर ले जा सकता है।

आप भजन पढ़ते हैं कि जब भक्त याद करता है तब वह नंगे पैरों दौड़ा आता है। प्यारेयो! यह वही जगह है जहाँ वह नंगे पैरों दौड़ा आता है। आप अंदर उस ठिकाने पर पहुँचें जहाँ आपके अंदर गुरु आता है। मैं बताया करता हूँ कि गुरु नौं द्वारों में नहीं आता क्योंकि नौं द्वारों में गंद भरा हुआ है। वह जब भी आएगा दसवें द्वार-तीसरे तिल पर आएगा। आप वहाँ पहुँचकर पुकार करें, वह पुकार सुनकर आपके सोचने से पहले ही आपके पास पहुँच जाएगा।

मैं मरी जाऊं जीऊं अब कैसे तुम मेरी सुध न सँवारी।

अब आत्मा कहती है, ''मैं मरी जा रही हूँ तूने मेरी सुध नहीं ली फिर कब मेरी सुध लेगा?'' सदने ने कहा थाः

डूब मुए नौका मिले कओ कहो चढ़ाओ।

मैं जब डूब गया तब तू नौका लेकर आया तो किसे बेड़ी में बिठाएगा? अगर मुझ मरे हुए को मुक्ति देगा तो उस मुक्ति का क्या करना है? तू मुझे मेरे जीवनकाल में ही मिल। नामदेव जी कहते हैंः

मुए हुए जे मुक्ति देगा, मुक्ति न होय कोयला।

मैं बताया करता हूँ कि माता अपने काम में मस्त है। बच्चा सोया हुआ है जब तक बच्चा सोया हुआ है सच्ची तरह से माता को याद नहीं करता, तड़पता नहीं माता अपने काम में लगी रहती है। जब

बच्चे को भूख लगती है तो वह रोता है तड़पता है। माता के दिल में ममता है वह भागकर आती है बच्चे को छाती से लगाकर बिना माँगे ही उसकी जरूरत को पूरा करती है।

अगर हम भी तीसरे तिल पर पहुँचकर अरदास करें रोएं! जिसने हमारी जिम्मेवारी उठाई है उसके दिल में भी ममता है वह बिना माँगे ही हमारी जरूरत पूरी करेगा लेकिन हम वह चीज माँग ही नहीं रहे। हम 'नाम' के बिना जो कुछ भी माँग रहे हैं दुख ही माँग रहे हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।
देह नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।

डालो जान देयो सरजीवन मैं तुम पर बलिहारी।

हे सतगुरु! मैं तुझ पर बलिहार जाती हूँ। मुझे जीवन दे मेरी आत्मा को संजीवनी बूटी पिला, 'नाम' का अमृत पिला जिससे मेरे अंदर जीवन आएगा।

वचन सुनाओ दर्श दिखाओ हरो पीर मेरी सारी।

आमतौर पर हम सन्तों से बाहरी 'नाम' लेकर मस्त हो जाते हैं। 'नाम' की साधना नहीं करते। सन्तों ने हमें बाहर जो सिमरन का खिलौना दिया है अगर हम इसे पकाएंगे तो ही आगे सबक मिलेगा।

मैं बताया करता हूँ कि बचपन में जब हमें स्कूल में पढ़ने के लिए डाला गया तब हम दो जमींदारों के लड़के और एक जुलाहा था। टीचर ने हमें पढ़ने के लिए जो सबक दिया हमने उसे याद किया। जुलाहा छोटी सी दीवार पर चढ़कर बैठ गया। टीचर बाहर से आया तो उसने जुलाहे से कहा, ''तू दीवार पर बैठा है पढ़ता क्यों नहीं?'' जुलाहे ने कहा, ''तुझे क्या लेना है मैं अपने आप पढ़ लूंगा।'' टीचर ने कहा, ''कान पकड़।'' जुलाहे ने भागकर टीचर के कानों को पकड़

लिया। सोचकर देखें! उसने कैसे कामयाब होना था? उस जुलाहे के साथ हमारी स्कूल में इतनी ही संगत हुई। जब हम छुट्टी पर आते तो वह जुलाहा हमसे कपड़े माँगता और कहता कि तुम मेरे क्लासफेलो हो। हमारी उसके साथ सिर्फ दो तीन घंटे की ही संगत हुई, वह पढ़ा नहीं अगर वह स्कूल में टीचर का कहना मानता सबक याद करता तो उसे टीचर आगे भी बताता; हमारी भी यही हालत है।

अगर हम बाहर दिए हुए सबक को जपेंगे तो गुरु हमें अंदर आकर सतसंग देगा जिसे अंतरी सतसंग कहते हैं। गुरु यहाँ आकर धुन पकड़ाएगा अब धुन हमें सुनाई तो देती है लेकिन खींचती नहीं। आप यहीं मस्त न हों अंदर जाकर भी प्राप्त करें। आत्मा कहती है हे गुरु! तू मेरे पास आ मुझे वचन भी सुना और धुन भी पकड़ा।

राधास्वामी सुनो हमारी मैं तुम्हरे आधारी।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में प्रेमी आत्मा की **तड़प** बताई है जिसके अंदर इतना दर्द और विरह होती है वही ऐसी कहानियों को अपने ऊपर ढाल सकता है। बचपन से ही उसके अंदर इतनी **तड़प** होती है कि वह साधु-सन्तों के पीछे फिरता है। वह गुरु को किस तरह के पत्र भेजता है चाहे अभी उसे उसका गुरु नहीं मिला होता। महात्माओं ने अपनी ही विरह की कहानियाँ लिखी हैं:

मैंनू दुख आशिकी दा केहा दुख आशकां दा।
आशिकां दे ताहीं अग्गे आखया पुकारके।
आशिकी बगैर किस्सा लिखिदा न आशिका दां।
बोलया जे झूठ तुसी देखना विचारके।
ईश्क ते चतर चतुराई नाल रोंवदेनें।
नहीं तो बैठ जावंदेने चुप मन मारके।
सब कोई अपने सुनावे दुख।
किसे नूं वी खास दुख कहे संसार के।

मैं परमात्मा की याद में हर जगह उस करण-कारण कृपाल को खोजता रहा। जब वक्त आया तो उसने मेरी पुकार को सुना यह भी पता लगा कि यह आज से ही नहीं पहले से पुकार सुन रहा है। यह मेरा जन्म-जन्म का साथी है।

तू मेरा साथी जन्म जन्म का।

मैं अपने प्यारे गुरु कृपाल का संदेश हमेशा बताया करता हूँ कि सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर भजन-सिमरन में बैठ जाएं। जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक तन को खुराक न दें; तन की खुराक अन्न है आत्मा की खुराक भजन-सिमरन है अगर हम एक दिन खाना न खाएं तो शरीर मुरझा जाता है इसी तरह हम आत्मा की कमजोरी नहीं देख रहे! हम छोटी सी बात से घबरा जाते हैं कहते हैं कि बैठा नहीं जाता।

अगर मन बलवान है तो आत्मा बलवान होगी। हमारे फौजी जवान कश्मीर श्रीनगर की बर्फीली ऊँची पहाड़ियों पर पहरा देते हैं अगर हम उन नजारों को आँखों के आगे रखें तो क्या भजन पर बैठना ही मुश्किल है? हम भजन के लिए ध्यान नहीं देते। हम भजन के चोर बन जाते हैं। लाख बहाने बनाते हैं कि देखो जी! अगर शरीर तंदरूस्त हो हम तभी भजन करें। जब शरीर तंदरूस्त हो जाता है तब हम कौन सा भजन करते हैं?

परमात्मा ने हमें जो समय दिया है इसमें हम ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करें और जीवन को पवित्र बनाएं। हमें 'नाम' मिला है गुरु मिला है। महात्मा हमें सतसंग में बताते हैं कि हमें अपने जीवन को सुधारना चाहिए।

©©©

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सवाल जवाब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी: *दया क्या है, क्या यह खुदाई-दात और उसकी परछाई है जैसे-जैसे समय बीतता है तो क्या दया खुदा की दी हुई रहमत है?*

बाबा जी: दुनियावी तौर पर भी समझाने के लिए बताया जाता है कि जब कोई बहुत बड़ा मुलज़िम जज के सामने पेश होता है तब उसके ब्यान, गवाह और पुलिस की रिर्पोट के मुताबिक समझाया जाता है कि इसे छोड़ना जायज़ नहीं। यह वाक्य ही अपराधी है लेकिन कई बार वह मुलजिम सच्चे दिल से विनती करता है बेशक ऐसा कभी-कभी होता है; आम अदालतों में ऐसा देखने में नहीं आता।

जज को यह भी अधिकार होता है कि वह थोड़ी बहुत रियायत कर सकता है मुलजिम को छोड़ भी सकता है लेकिन आमतौर पर ऐसा नहीं होता। जज लिख देता है कि इसमें ज्यादा से ज्यादा झूठ दिखाया गया है सच और झूठ का फैसला करना भी मुश्किल है बेशक ऐसा करना दुनियावी जज के लिए मुश्किल होता है क्योंकि दुनिया में न्याय करना बहुत जरूरी है। काल के राज्य में न्याय है लेकिन सवाल दया का है कि हम दयाल के राज्य में गए हैं। गुरु को फुल पावर होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सौंपे जिस भंडार फिर पुछ ना लीतियन।

परमात्मा जिसे एक बार अधिकार दे देता है फिर उससे यह नहीं पूछता कि इसे क्यों बख्शा? दयाल के राज्य में बख्शीश ही बख्शीश है। बख्शीश का मतलब किसी को जिंदगी बख्श देना है। यह जिंदगी नहीं कि हम चल फिर रहे हैं जो कीमती चीज़ आत्मा इस शरीर के अंदर हरकत कर रही है वह सदा अमर है अगर इस शरीर

को दुख होता है तो आत्मा को भी थोड़ा बहुत दुख होता है। गुरु इसे मालिक से मिला देता है यही दया है। आत्मा और परमात्मा एक बन जाते हैं। गुरु उसे अपना ही स्वरूप बना लेता है, अपना आसन दे देता है; इंसान को खुदा बना देना ही दया है।

प्यारेयो! चाहे सतसंगी है चाहे बेसतसंगी किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा कोई हिसाब-किताब नहीं होगा! दो ताकतें हमारे साँस-साँस का लेखा ले रही हैं। सन्तों की बानियों में इन दो ताकतों को चित्र-गुप्त कहा गया है। ये दोनों ताकतें हर समय हमारा हिसाब रखती हैं। अंत समय में हर किसी का चिट्ठा निकालकर धर्मराज की कचहरी में पेश किया जाता है।

धर्मराज की किसी के साथ दुश्मनी नहीं किसी के साथ प्यार नहीं। जैसी हमारी जिंदगी की मिसल बनी होती है ये दोनों ताकतें चित्र-गुप्त धर्मराज की कचहरी में पेश कर देते हैं। उसके मुताबिक ही

धर्मराज न्याय करता है कि मैं इसे वहाँ जन्म दूँ जहाँ यह कर्मों का भुगतान कर सके लेकिन सतसंगियों का रास्ता इससे अलग होता है। बानी में लिखा है जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं गुरु की हिदायतों पर चलते हैं चित्र-गुप्त उनका हिसाब नहीं रखते क्योंकि उनका हिसाब उनके गुरु के पास होता है।

चित्र गुप्त जो लिखदे लेखा, भक्त जना को दुष्ट न पेखा।

बचपन से ही मेरा झुकाव सेवा की तरफ रहा है। मुझे आर्मी में भी मौका मिला जब कोई बीमार होता तो मैं उसकी दिल लगाकर सेवा करता था। मैंने कई लोगों का अन्त समय भी देखा है। सबका एक जैसा ख्याल नहीं होता। कईयों को होश होती है तो कई चुप रहते हैं। कई उस समय बहुत शोर करते हैं कि बहुत भयानक शक्लों वाले सामने दीवार पर खड़े हैं मुझे आवाज़ लगा रहे हैं।

कई यह भी कहते हैं कि हमारा गुरु आया है वह सामने खड़ा है मुझे खुशी है लेकिन हमारे बेइतबारे मन उस समय डॉक्टर से यही कहते हैं कि इसके दिमाग को बुखार है यह बौखला गया है। परिवार के लोग घबराए होते हैं। कोई उस बेचारे की बात नहीं सुनता। मुझे ऐसा गाँवों में भी देखने को मिला है। आजकल तो हिन्दुस्तान में महामारी का खात्मा हो गया है। आज से पच्चीस साल पहले महामारी का बहुत प्रकोप था। महामारी घरों के घर खाली कर देती थी।

मेरी रिश्तेदारी का एक वाक्या है। एक चौदह साल के लड़के हुक्म सिंह पर महामारी का प्रकोप हुआ। अन्त समय में वह यही कहता रहा, ''मुझे कीड़े खा रहे हैं। भयानक शक्लों वाले मुझे घसीट रहे हैं और जहरीले साँप काट रहे हैं।'' मैं जब उसके पास बैठता तो वह बिल्कुल शान्त हो जाता और मुझसे कहता कि जब आप मेरे पास बैठते हैं तो मुझे शान्ति मिलती है। मेरे माता-पिता भयानक शक्ल वालों को नहीं हटाते आप मुझसे दूर न जाएं।

उन दिनों मुझे महाराज कृपाल नहीं मिले थे। मैं 'दो-शब्द' का अभ्यास करता था। अब आप ही फैसला कर सकते हैं कि वह कौन-सी ताकत थी कि मेरे पास बैठने से उसे शान्ति मिलती थी? लेकिन हमारे मन बेइतबारे होते हैं। हम कह देते हैं कि इसके दिमाग को बुखार है इसलिए यह बौखला गया है।

सच्चाई यह है कि जीव अपने कर्मों का चिट्ठा लेकर आता है उसके मुताबिक ही भुगतान करता है अगर कोई प्रेमी आत्मा पास बैठती है तो उसे ठंडक मिलती है। पानी के पास बैठने से ठंडक और आग के पास बैठने से गर्मी लगती है अगर हम किसी प्रेमी आत्मा के पास बैठते हैं तो जरूर हमें कुछ न कुछ सहारा, मदद मिलती है।

अपने एक सेवादार बचन सिंह की पत्नी ने जब शरीर छोड़ना था पाँच-छः महीने पहले ही उसे अंदर से एक बहुत भयानक कुत्ता खाने लग गया उसने बहुत दुहाई दी। डॉक्टर ने कहा कि इसके दिमाग का संतुलन बिगड़ गया है। वह मुझे वीर कहती थी। उसने अपने पति बचन सिंह से कहा कि तू मुझे वीर के पास लेकर चल। वे जीप लेकर मेरे पास आए। उसने मेरे पास बैठकर अपनी सारी कहानी सुनाई। मैंने उससे कहा, ''देख बहन! हमारी आत्मा ने एक दिन यह शरीर जरूर छोड़ना है लेकिन तुझे अब यह समस्या नहीं होगी। मेरा गुरु कृपाल तेरे साथ है अब वह ऐसा नहीं होने देगा। तुझे चिन्ता करने की जरूरत नहीं। उसके बाद वह पाँच-छः महीने बड़ी शान्त मन से जीवित रही उसे वह समस्या नहीं हुई।''

प्यारेयो! वहाँ माता-पिता, बहन-भाई, धन-दौलत या हुकूमत हमारा साथ नहीं देती। हमने जिससे 'नाम' लिया है अगर हम दुःख के समय सच्चे दिल से उसे याद करते हैं तो वह जरूर हमारी मदद करता है। शिष्य और गुरु का रिश्ता अटूट है। वह हमारी श्रद्धा के मुताबिक हमारी मदद करता है।

प्यारेयो! हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि अन्त समय में गुरु को याद करेंगे तो वह ले जाएगा। ऐसा वही सोचते हैं जो आलसी, दलिद्री होते हैं। मेहनती आदमी यही सोचता है कि मैं कमाई करके खाऊँ, अपने माता-पिता पर बोझ न बनूं। अच्छा शिष्य यह नहीं चाहता कि गुरु मेरा बोझ उठाए! हम अन्त समय में अरदास करें दरवाजे की तरफ देखें कि गुरु कब आएगा तो इसमें हमारी क्या बहादुरी है? अगर हमने जिंदगी में इस मसले को हल किया हो, गुरु को अंदर प्रकट किया हो तो हमें बाहर झाँकने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

एक प्रेमीः *मुझे यह बताया गया है कि अपने अभ्यास के तजुर्बे कभी भी किसी को नहीं बताने चाहिए। क्या इसमें अपनी पत्नी भी शामिल है?*

बाबा जीः हमारे धर्म ग्रन्थों के मुताबिक सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग चार युग है। चारों युगों का अपना-अपना धर्म है। सतयुग में अगर कोई एक आदमी जुल्म या पाप करता था तो उसका असर सारी प्रजा के ऊपर पड़ता था, उसका दंड सबको भुगतना पड़ता था। इसी तरह त्रेता युग में अगर कोई एक आदमी जुल्म या पाप करता था तो उसका दंड सारे शहर को भुगतना पड़ता था। इसी तरह द्वापर में अगर कोई आदमी बुराई वाली हरकत करता था तो उसके सारे कुल को उसका भुगतान करना पड़ता था। कलयुग की खासियत यह है कि जो आदमी कर्म करता है वही उसका भुगतान करता है।

बेशक हम कलयुग को बुरा कहते हैं क्योंकि हमारा मन चंचल है। हमारा ख्याल नहीं टिकता, दुनिया में ज्यादा फैल चुका है। इस युग में विषय-विकारों का बहुत जोर है, जीवों को फँसाने के लिए और भी बहुत साधन हैं। इस युग में पति का कर्म पत्नी को और पत्नी का कर्म पति को नहीं लगता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ऐह कर करे सो ऐह कर पाए।
कोई न पकड़या किसे दे थाए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियां-बीवी को एक जैसे तजुर्बे नहीं होते। इससे यह साबित होता है कि हमारे कर्म अलग-अलग है। मियां-बीवी का दुनियावी रिश्ता है लेकिन हम परमार्थ में चल रहे हैं। मियां-बीवी को दुनियावी प्यार बनाकर रखना चाहिए और एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। मियां-बीवी ईर्ष्या भी कर सकते हैं कि इसकी इतनी तरक्की है मेरी क्यों नहीं?''

मेरे पास बहुत प्रेमियों के पत्र आते हैं। मियां-बीवी का प्यार मन की लहरों में गुम हो जाता है। एक लहर आती है तो हम एक-दूसरे के नज़दीक होते हैं दूसरी लहर आती है तो हम एक-दूसरे से अलग होने की सोचते हैं।

एक मियां-बीवी महाराज कृपाल के नामलेवा थे। किसी बात पर उन मियां-बीवी में खटपटी हो गई। मियां अभ्यास में बैठ गया बीवी आंगन साफ कर रही थी और साथ-साथ यह भी फरियाद कर रही थी, ''हे बाबा कृपाल! यह मेरे साथ गुस्सा होकर बैठा है तू मेरी फरियाद सुन इस बन्दे की सुरत अंदर न चढ़ने दे।'' अगर आप ऐसी पत्नी को अपना तजुर्बा बताएंगे तो क्या वह आपसे जलन नहीं करेगी? औरत के बारे में बताने के लिए और भी कुछ बहुत है अगर हम औरत के साथ मिलकर चलेंगे तो हमारी जिंदगी स्वर्ग बन सकती है। हम ज्यादा अभ्यास करेंगे ज्यादा तजुर्बे प्राप्त कर सकेंगे।

एक प्रेमी ने अपनी औरत के बारे में तजुर्बे बताए। उनकी नई-नई शादी हुई थी, नया-नया प्यार था, नई-नई उमंगे थी। उसने कहा कि जिस दिन से यह मुझे मिली है मुझे कई जन्मों का ज्ञान हो गया है। मुझे इसके अंदर भगवान नजर आता है। बस! कृपाल इसी में है। मैंने बड़े प्यार से सब कुछ सुना। मैंने कहा, ''परमात्मा कृपाल!

तुम्हारे प्यार को बढ़ाए हम यही कामना करते हैं।'' कुछ महीनों बाद वह पति-पत्नी अलग हो गए, एक-दूसरे की शक्ल देखने के लिए भी तैयार नहीं थे। मैंने बहुत जोर लगाया। उन्हें वह समय भी याद करवाया कि आप तो ऐसे कहते थे लेकिन अभी तक वे इकट्ठे नहीं हुए।

अब आप सोचकर देखें! हम पति-पत्नी के रिश्ते को कितना मजबूत समझते हैं। किसी प्रेमी ने कबीर साहब के पास भी ऐसा ही सवाल किया था। कबीर साहब ने अपनी बानी में लिखा है:

तिनको देख कबीर लजाने।

आप कहते हैं, ''जब हम दुनियावी बातों को परमार्थ के साथ मिलाते हैं तो हमें शर्म आती है। परमात्मा का प्यार पवित्र होता है हम उसे इन्द्रियों के घाट पर ले आते हैं; इससे बढ़कर हमारी नादानी और क्या हो सकती है?''

एक प्रेमी: *काफी समय से मेरे दिल में ख्याल आ रहा है कि मैं आपसे पुछूँ कि आपने जो तीन साल अभ्यास के अंदर बिताए उस दौरान आपको किस तरह के तजुर्बे हुए? क्या आपको भी काल और महाकाल का सामना करना पड़ा और वह किस रूप में आपके सामने आया? मैं इस तरह की छोटी-छोटी बातें जानने के लिए उत्सुक हूँ।*

बाबा जी: मैं इस बारे में बिना पूछे ही अपनी आप बीती बताया करता हूँ। दूसरी वर्ल्ड-वार के समय मेरी उम्र ज्यादा नहीं थी और उस समय आर्मी में यह कानून नहीं था कि अठारह साल का ही भर्ती करना है, सिर्फ देखा जाता था कि यह कम से कम एक गोली तो खा ही लेगा। बस! जबरदस्ती भर्ती कर लेते थे। इसी तरह गर्वमेंट ने मुझे भी जबरदस्ती भर्ती किया था। उस समय लोग बीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन आर्मी में नहीं जाना चाहते थे क्योंकि हर आदमी को यकीन था कि आर्मी में मौत अवश्य है।

उस समय हिटलर आगे बढ़ रहा था। शुरू-शुरू में वह जो भी कहता था अगले दिन करके दिखा देता था। उस समय मैंने अपनी बारी के बिना लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दे दिया हालाँकि मेरा नम्बर नहीं था क्योंकि मेरी उम्र छोटी थी। मुझे देखकर कई अफसर सोचते थे कि इस छोटी सी उम्र वाले ने कैसे अपना नाम दर्ज करवा दिया है? लड़ाई में जाने से एक महीना पहले हमारे ग्रुप की डॉक्टरी जाँच हुई। हमारे कपड़े उतरवाकर चेक किया गया कि इनमें से कौन कमजोर है उसका दूध लगाया जाए। डॉक्टर ने हमारे कमान्डर से पूछा कि किसका दूध लगाया जाए? कमान्डर की आँखों में आँसू आ गए वह कहने लगा, ''ये सब बलि के बकरे हैं मैं तो कहता हूँ कि सभी का दूध लगवा दें।''

उस समय लड़ाई में जाने के लिए लोगों के मनोबल गिरे हुए थे लेकिन मैंने खुशी-खुशी अपना नाम दे दिया कि मौत जहाँ आनी है

आ ही जानी है मौत कोई लिहाज नहीं करती लेकिन एक दिन जब मैं बाहर से गुफा के अंदर दाखिल हो रहा था तो वह ताकत जिसे हम काल कहते हैं, मन कहते हैं वह शेर की शक्ल में आया और कहने लगा कि मैं तुझे अंदर नहीं जाने दूँगा।

मैं बताया करता हूँ कि लड़ाई में जाना बहुत आसान था क्योंकि वहाँ लोग हमारी बहुत तारीफ करते थे। यह भी यकीन था कि एक बार गोली लगेगी तो शरीर ठंडा हो जाएगा लेकिन यहाँ रोज़ लड़ना पड़ता है। हाथ में कोई बंदूक, तीर कमान नहीं केवल गुरु कृपाल का आसरा और उसके दिए हुए सिमरन की ढ़ाल थी। तोप के आगे खड़े हो जाना आसान है लेकिन मन का मुकाबला करना बहुत कठिन है।

महाराज सावन सिंह जी ने अभ्यास किया। महाराज कृपाल ने अभ्यास किया सभी इस बात की अगुवाही देते हैं कि मन का मुकाबला करना बड़ा सख्त है। तुलसी साहब भी कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।

परम पिता कृपाल कहा करते थे अगर आपका दोस्त कपड़े बदलकर आ जाए तो क्या आप उसे नहीं पहचानेंगे? इसी तरह वह परमात्मा पहले भी हमारे अंदर था अब भी है और आगे भी रहेगा अगर वह भेष बदलकर हमारे पास आ जाए! और हमारे अंदर उस पिता की अंगुली पकड़ने की तमन्ना हो तो वह जब हमारे सामने आएगा हम उसे जरूर पहचान लेंगे।

अगर हमें यकीन आ जाए कि यह हमारा वही पिता है गलती से हमारी अंगुली छूट गई थी, यह हमें वही प्यार देगा क्या हम उस समय तजुर्बा करेंगे या उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। मेरा ख्याल है हम सबसे पहले उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। महात्मा चतुरदास, महाराज सावन सिंह जी कमाई वाला शिष्य था। वह कहता थाः

लया पछाने यार झरोखा घुट गले नाल लाया।

जब यह पता लगा कि यह हमारा पुराना यार है तो हमने उसे जोर से गले से लगा लिया। प्रेमी की ऐसी हालत होती हैः

सज्जन सेती सज्जन मिलया जैसे खंड पतासा।

चीनी पतासे में मिल जाती है, पतासा चीनी में मिल जाता है तो उसका कोई भिन्न-भेद नहीं रहता। प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे हम खुष्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें। मुझे आर्मी में ही हुक्म मानने की आदत पड़ी। मैं कभी भी अपने उस्तादों के खिलाफ नहीं हुआ। आर्मी में कानून होता है अगर आपको खाना पकाने का हुक्म मिला है तो सवाल बाद में करें कि आटा कहाँ से लाए! लकड़ियाँ कहाँ से लाएं! पानी कहाँ से लाए! पहले खाना तैयार करें रिपोर्ट बाद में करें।

मेरे दिल में यह ख्याल था कि मैं आर्मी में इंसानों का हुक्म सच्चे दिल से मानता रहा हूँ। जब महाराज कृपाल आए तो मैंने यही सोचा! दया करके भगवान मेरे घर में आ गया है यह आदमी नहीं परमात्मा है। कबीर साहब कहते हैं, ''अगर कोई प्यासा किसी पानी वाले के पास जाता है तो वह यह नहीं पूछता कि यह पानी गर्म है या ठंडा है साफ है या नहीं या यह पानी किस जाति का है? उसे पानी की कद्र है। वह केवल यही कहता है कि मेरी प्यास बुझा दे बाद में बात करेंगे।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

बिन ग्राहक गुण बेचिए तो गुण सहगो जाए।
गुण का ग्राहक जे मिले तो गुण लाख बिकाए।

मैं बचपन से प्यासा था। जब दयालु कृपाल अमृत की बुखाल लेकर मेरे घर में आए तब मैंने यह नहीं पूछा कि आप किस जाति से हैं? आपकी शादी हुई है? आपके बच्चे हैं, आप कहाँ रहते हैं? बस!

मेरे दिल में यही था कि मेरे सोए हुए के भाग्य जाग गए हैं भगवान मेरे घर में आ गया है। उन्होंने मुझे जो कुछ कहा मैंने वह कर लिया। मैंने आपको अपने अंदर जगह दी और आपने मेरे अंदर खुद जगह बना ली। प्यारेयो! इससे बढ़कर और क्या तजुर्बा हो सकता है?

कई प्रेमियों ने हीर-रांझा का किस्सा सुना होगा। हिन्दुस्तान में एक शहर तख्तहजारा था, रांझा वहाँ का रहने वाला था। उसका नाम तीधो और जाति रांझा थी। वह अच्छे घराने का था। हीर झगंशाला के अच्छे घराने में पैदा हुई। रांझा के दिल में तड़प उठी। उसने अपना वतन राजपाट छोड़ा। दरिया पार करके झंगशाला आ गया। हीर के माता-पिता ने काफी भैंसे रखी हुई थी। रांझा हीर के यहाँ बिना मजदूरी के भैंसे चराने लग गया। उसके दिल में ख्याल था शायद! मैं इसी की खोज़ में आया हूँ।

उस समय हिन्दुस्तान में कोई आदमी किसी लड़की से मजाक नहीं कर सकता था किसी लड़की से यह नहीं कह सकता था कि मैं तुझसे शादी करना चाहता हूँ अगर ऐसा कह देता तो उसका नतीजा मौत थी इसलिए रांझा हीर के माता-पिता को यह नहीं कह सकता था कि मैंने इससे शादी करवानी है। वह बड़े प्यार से चार आदमियों के बराबर काम करता, उसे यह डर था कि कहीं मुझे निकाल न दे।

हीर और रांझा की दिल से दिल को राह थी। हीर को पता था कि यह मेरा पुराना दोस्त है। उनका प्यार सच्चा था, दुनियावी विषय-विकारों वाला इश्क नहीं था। हीर के माता-पिता ने हीर की शादी किसी और लड़के के साथ कर दी तो हीर डोली में नहीं बैठी उसने अंदर से रांझा को ही अपना पति पुकारा।

वारेशाह की किताब में हीर के चाचा को मन कहकर ब्यान किया गया है। जिस तरह मन सतसंगी और गुरु के बीच दीवार बनकर खड़ा हो जाता है उसी तरह वह भी हीर और रांझा की प्यार की

कहानियाँ लोगों के आगे घड़कर रखता था। उसने दोनों के प्यार को दुनिया में मशहूर कर दिया था। जब हीर की शादी हुई तो उससे कहा गया कि तेरा रांझा मर गया है; हीर ने उसी जगह प्राण त्याग दिए और कहा, ''रांझा के बिना मेरा जीना ही हराम है।'' जब रांझा को इस बात की खबर मिली तो उसने भी प्राण त्याग दिए और कहा, ''हीर के बिना दुनिया में मेरा कुछ भी नहीं।'' यह सच्चे प्यार की कहानी है। सूफी सन्त बुल्लेशाह ने हीर-रांझा के प्यार को अपने कलाम में इस तरह ब्यान किया है:

उल्टी हीर, हीर विच रांझा।

आत्मा हीर को कहा गया है। जब हम अपनी आत्मा को उल्टा लेते हैं तो अंदर के मंडलो में शब्द रूपी रांझा मिल जाता है फिर यह हीर आत्मा अपने आपको भूल जाती है। एक समय हीर ने अपनी सखियों से कहा, ''क्या तुमने हीर को कहीं देखा है?'' उसकी सखियों ने कहा कि तू कौन है? वह शर्मिन्दा होकर कहने लगी:

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।
सद्दो नी मैंनू तीधों रांझा हीर न आखो कोई।

अगर हम भी सच्चे दिल से अपने आपको भूलकर गुरु के दिए हुए सिमरन को याद करें तो हम भी कह सकते हैं कि हमारी आत्मा पर उस शब्द रूपी रांझा का कब्जा है, उस परमात्मा रूपी सावन-कृपाल का कब्जा है; इससे बढ़कर और क्या तजुर्बा हो सकता है?

मैं सारी जिंदगी कभी तजुर्बों के पीछे नहीं रहा। जब शुरु-शुरु में मेरे पास पश्चिम के प्रेमी आने लगे तो कोई कहता, ''मेरे गिट्टे दुखते हैं।'' कोई कहता, ''मेरे गोडे दुखते है और कोई कहता, ''मेरा मन नहीं टिकता।'' मुझे इनके सवालों से कोई परेशानी नहीं थी लेकिन मैं यह सोचता! इन्हें भगवान कृपाल मिला है फिर भी ये ऐसे सवाल क्यों करते हैं? गुरु कृपाल ने मुझे अंदर से कहा कि तूने इन

प्रेमियों को साथ लेकर चलना है, ये जो कुछ भी कहते हैं इन्हें हौंसला दे और भजन-सिमरन का उत्साह बख्श।

जिस तरह रांझा तख्त-हजारा का मालिक था। उसके पिता के घर में सब सहूलियते थी लेकिन उसने हीर के प्यार में भैंसे चराई। इसी तरह परमात्मा कृपाल के तख्त हजारा सच्चखण्ड में सब सहूलियतें थी, वहाँ मौत-पैदाईश नहीं वह शान्ति का देश है। वहाँ कोई किसी से ईर्ष्या नहीं करता। वह कृपाल इतनी सहूलियते छोड़कर इस खोई हुई हीर के लिए रांझा बनकर आया, शब्द देह धारकर आया।

इस हीर अजायब की क्या ताकत थी कि उसका हुक्म न मानता? इससे बढ़कर और क्या तजुर्बा हो सकता है। उसने जब मेरे अंदर अपनी जगह खुद ही बना ली तो आप लोगों को बताने के लिए मेरे पास क्या बचा है। सूरज के आगे मोमबत्ती जलाकर क्या सूरज की तुलना की जा सकती है। जिसे भी परमात्मा मिला वह चुप हो गया। कबीर साहब भी कहते हैं :

कहत कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे कहन न जाई हो।

मैं अपने गुरु के जीवनकाल का एक तजुर्बा बता रहा हूँ। एक बार कुछ प्रेमी नामदान के लिए बैठे। हजूर ने मुझसे कहा, ''इन्हें थ्योरी समझा दे।'' मैंने कहा, ''सच्चे पातशाह! तू दया का समुद्र है अगर तू इन्हें खुला दीदार दे दे तो पंडितों और मौलवियों के झगड़े खत्म हो जाएं! समाजों में ईर्ष्या खत्म हो जाए! घर-घर में तेरा प्यार हो जाए!'' हजूर ने कहा, ''मेरे कपड़े न फड़वा।''

उन्होंने यह कहकर मेरी जुबान बंद की नहीं तो हो सकता है मैं उनके जीवनकाल में इससे भी बढ़कर कह देता क्योंकि सच को क्या सबूत चाहिए। जो हमारे अंदर प्यार डालता है वह जाप में भी रख सकता है। इस बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, दिल फूट-फूटकर बाहर आता है। गुरु के प्यार की कहानियाँ खत्म नहीं होती।

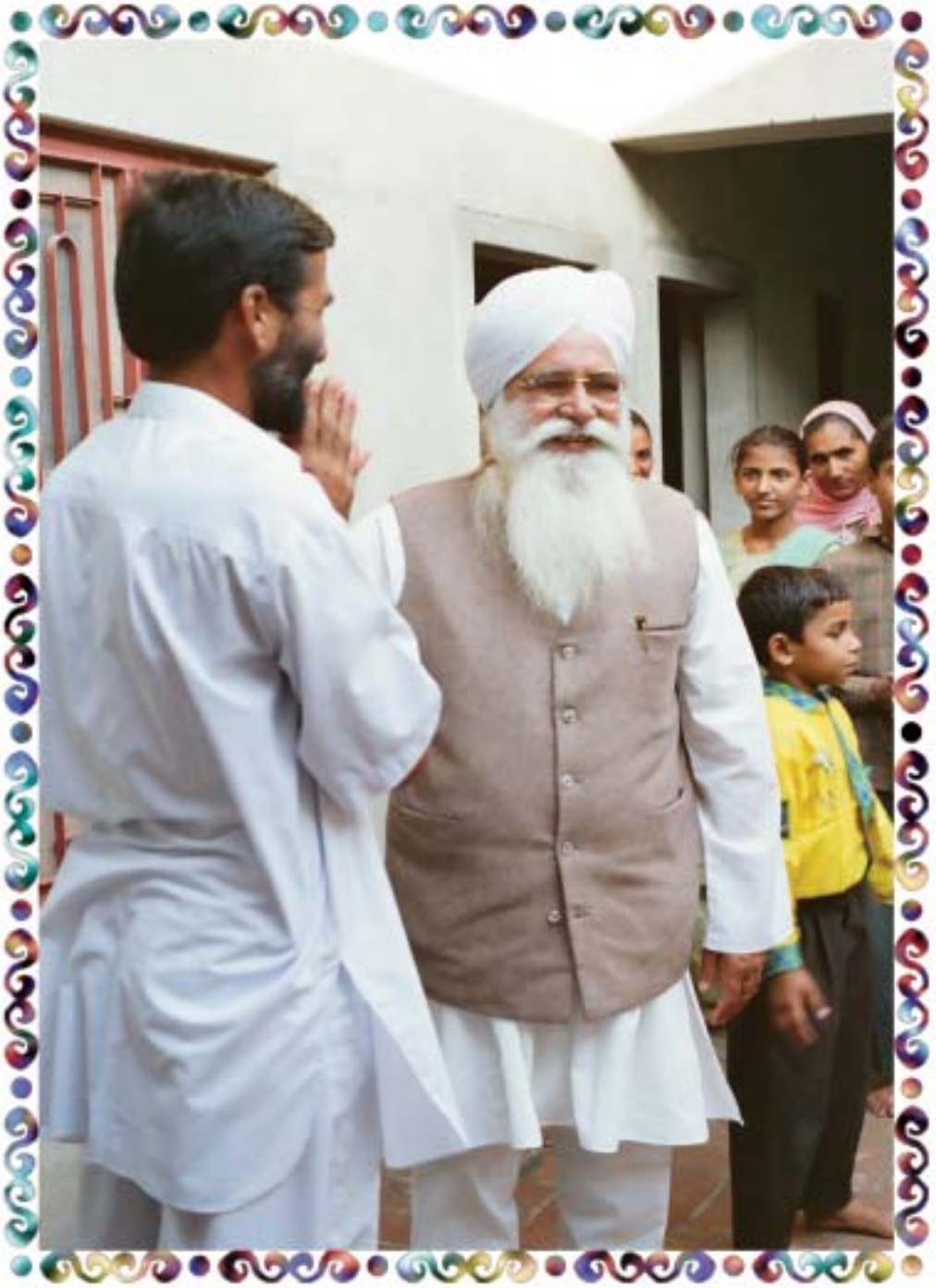

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

सच्चा और झूठा प्रेम

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''सच्चा **प्रेम** उसे कहते हैं जिसकी मद्दम लौ पर दीपक की लाट हँसे। यह वह आग है जो पल में परवाने को जला देती है।'' ऐ सवेरे के मुर्ग! तूने कुकुडू कू का क्या शोर मचा रखा है? तुझे भँवरे से ईश्क का सबक सीखना चाहिए। भँवरे का तन जल जाता है लेकिन वह सी तक नहीं करता।

हकीकी ईश्क के बिना उम्र अकार्थ ही चली जाती है। जिसने प्रेम के आलौकिक रस का पान नहीं किया वह अमृत क्या पिएगा? जिसने **प्रेम** के रस पर अपना सिर भेंट नहीं चढ़ाया उसे युग-युग जीने का क्या लाभ? अगर ग्रंथों-पोथियों का पठन-पाठन किया या ग्रंथों का हाफिज भी बन गया लेकिन उसके तात्पर्य को नहीं समझा तो यह ज्ञान किस काम का? दिन भर जुबान से प्रीतम को पुकारता रहा लेकिन प्रीतम के लिए अंदर **प्रेम** नहीं उपजा! मतलूब प्रीतम नहीं मिला तो बाहर रोने-धोने का क्या लाभ?

जिस प्रेम रस चाखा नहीं, अमृत पिया तो क्या हुआ।
जिस ईश्क पर सिर न दिया, जुग जुग जिया तो क्या हुआ।
देखी गुलिस्तां बोस्तां, मतलब न पाया सेख का।
सारी किताबें याद कर, हाफिज हुआ तो क्या हुआ।
बलि पुकारे पिया पिया, पिया कहे जिया दिया।
मतलूब हासिल न हुआ, रो रो मुआ तो क्या हुआ।

सारी दुनिया पोथियां पढ़-पढ़कर मर रही है पर कोई पंडित नहीं बन सका अगर ढाई अक्षर प्रेम के पढ़ ले तो पंडित बन जाए।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''जिस रूह को हकीकी ईश्क नहीं हुआ उसका न आना ही अच्छा है क्योंकि उसका आना शर्मिंदगी को छोड़कर और कुछ नहीं। जिस इंसान के अंदर ईश्क का रंग नहीं वह परमात्मा के सामने पत्थर और लकड़ी से ज्यादा कीमत नहीं रखता। जो उम्र ईश्क के बिना गुजरे उसे किसी हिसाब में न गिनें। ईश्क दिल और जान के लिए अमृत है।''

आप फिर फरमाते हैं कि प्रेम ऊँचे भाग्य से मिलता है, इसके बिना जिंदगी निष्फल है। बहुत ऊँचे भाग्यवाले को ही **प्रेम** की दात मिलती है। जिसकी जिंदगी ईश्क के बिना गुजरी उसे मालिक के दरबार में शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

कबीर साहब फरमाते हैं, ''जिनके घट के अंदर प्रीत नहीं, **प्रेम** का रस नहीं, जिनकी रसना पर मालिक का नाम नहीं वे नर पशु हैं; वे पैदा होकर कोई लाभ कमाए बिना ही मर जाते हैं। प्रेम के बिना भक्ति डिम्ब है। बेसमझ लोग पेट भरने के लिए अपना जन्म गँवा देते हैं। जिस घट के अंदर प्रेम मौजूद नहीं उस घट को मसान की तरह समझें, वह प्राणों के बिना लुहार की खाल की तरह साँस ले रहे हैं।''

जां घट प्रेम न प्रेम रस, पुन रसना नहीं नाम।
ते नर पशु संसार में, उपजयो मरे बेदाम।
प्रेम बिना जो भक्त है, सो निज डिम्ब विचार।
उदर भरन के कारणे, जन्म गँवायो सार।
जां घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, श्वास लेत बिन प्राण।

गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं कि कोई आदमी अति सुंदर काया रखता है, कुल वाला है, धनवान है; अति चतुर और मुखज्ञानी भी है अगर उसे मालिक से सच्ची प्रीत नहीं तो वह मुर्दा है।

अति सुंदर कुलीन चित्रमुख ज्ञानी धनवंत।
मृतक कहिए नानका जे प्रीत नहीं भगवंत।

हम जब तक अपनी प्यारी से प्यारी चीज मालिक के **प्रेम** पर कुर्बान नहीं कर देते तब तक हमारा कल्याण नहीं। रूह के अंदर प्रेम का गुप्त खजाना है। दुनिया की तरफ से मुँह मोड़कर मालिक की तरफ मुँह करने की जरूरत है।

सन्तों और आम लोगों का प्यार

सन्तो के मत में प्रेम की ही शिक्षा है। प्रेम और मालिक एक ही चीज हैं। प्रेम मालिक और मालिक का रूप **प्रेम** है। सन्तों और दूसरे लोगों में अगर कोई भेद है तो वह केवल प्रेम का ही है। सन्त प्रेम की दात बख्शते हैं। सन्त पापियों-पुन्नियों सबके साथ प्यार करते हैं। सन्त ही दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करने वाले होते हैं। प्रेम ही सच्चा मजहब है।

आप खलकत के साथ प्यार करें तो हम मालिक के साथ प्यार कर सकेंगे। निरोल **प्रेम** माया की मिलावट से रहित मंडलों में है। जो पुरुष दुनिया के रंग में रंगे हुए हैं उनका प्रेम जिस्म और जिस्म के ताल्लुक की जहर से भरा हुआ है। उनकी विष भरी प्रीत आपको जहर का असर देगी जिससे आप बच नहीं सकते। उनकी दुनिया से रंगी प्रीत आपको दुनिया का रंग दे सकेगी मालिक का रंग कदाचित नहीं।

सन्तजनों के अंदर मालिक की जाति का निरोल प्यार होता है अगर आप उनसे प्यार करें तो आपके अंदर मालिक का निरोल प्यार जाग उठेगा। मालिक सब जगह परिपूर्ण है इसलिए सबके लिए सच्चा प्यार आ जाता है। हमारा जीवन प्रेम की फुहारें देता है।

मालिक शब्द है। मालिक प्रेम है इसलिए शब्द भी **प्रेम** है। सन्तजन शब्द देहधारी होते हैं वे शब्द की दात बख्शते हैं; जो 'शब्द' की कमाई

करते हैं वे बेख्तियार प्रेम के फूटते सोमे बन जाते हैं। वे सबके साथ प्यार का बर्ताव करते हैं, प्यार से दुनिया को निहाल करते रहते हैं।

सभी साधनों की गर्ज **प्रेम** को पैदा करना है अगर शरीयत की रस्मों-रिवाजों में से प्रेम का अंश निकाल लिया जाए तो बाकी थोथी रस्में ही रह जाती हैं; जिनमें से मालिक का प्रेम कहाँ से मिले? हमारा अधूरा प्रेम अधूरी हस्तियों से चाहे कोई फल दे जाए लेकिन पूर्ण **प्रेम** पूर्ण जोत वाले किसी सच्चे महात्मा के चरणों में बैठकर ही नसीब हो सकता है। आत्मा का सोया हुआ प्रेम 'शब्द' की कमाई करने से जाग उठता है वह हमें माया की मैलों से ऊँचा रखता है।

आम प्रचारक लोग जो कमाई से खाली हैं और जिनके हृदय गुरु **प्रेम** से सूने हैं कहते नजर आते हैं कि परमार्थ में स्त्री-पुरुष सबके साथ प्रीत करने का कोई डर नहीं। देखने में आता है कि वे माया की गुज्जी जहर के असर को पाकर अदोगति में चले जाते हैं।

प्रेम करने के लिए केवल राम-नाम या सन्त ही हैं, इन्हें छोड़कर बाकी सब बंधन का कारण हैं। सन्तों की तालीम हमें रस्मों में नहीं फँसाती। प्रेम रूह की खुराक है।

आजकल मजहबों को सुंदर सिद्धान्तों और नेकियों का संग्रह समझा जाता है और साथ ही फिलास्फी की चाश्नी देकर उसके साथ प्रार्थना का नमक और काली मिर्च डालकर सलाद की तरह पेट की सफाई का किसी हद तक काम तो ले लिया जा सकता है पर भूखी रूहों की खुराक का समान नहीं होता। यह केवल 'नाम' या 'शब्द' के कारण ही प्राप्त हो सकता है। हमारे अंदर प्रेम जाग उठेगा जो रूह की खुराक और तृप्ति का कारण होता है। प्रेम ही हमारे सब काम करेगा **प्रेम** की दी हुई खुराक सारी दुनिया को मिल सकेगी। प्रेम को जाने बिना हम सच्चे परमार्थ को नहीं पा सकते।

शेष अगले अंक में.....

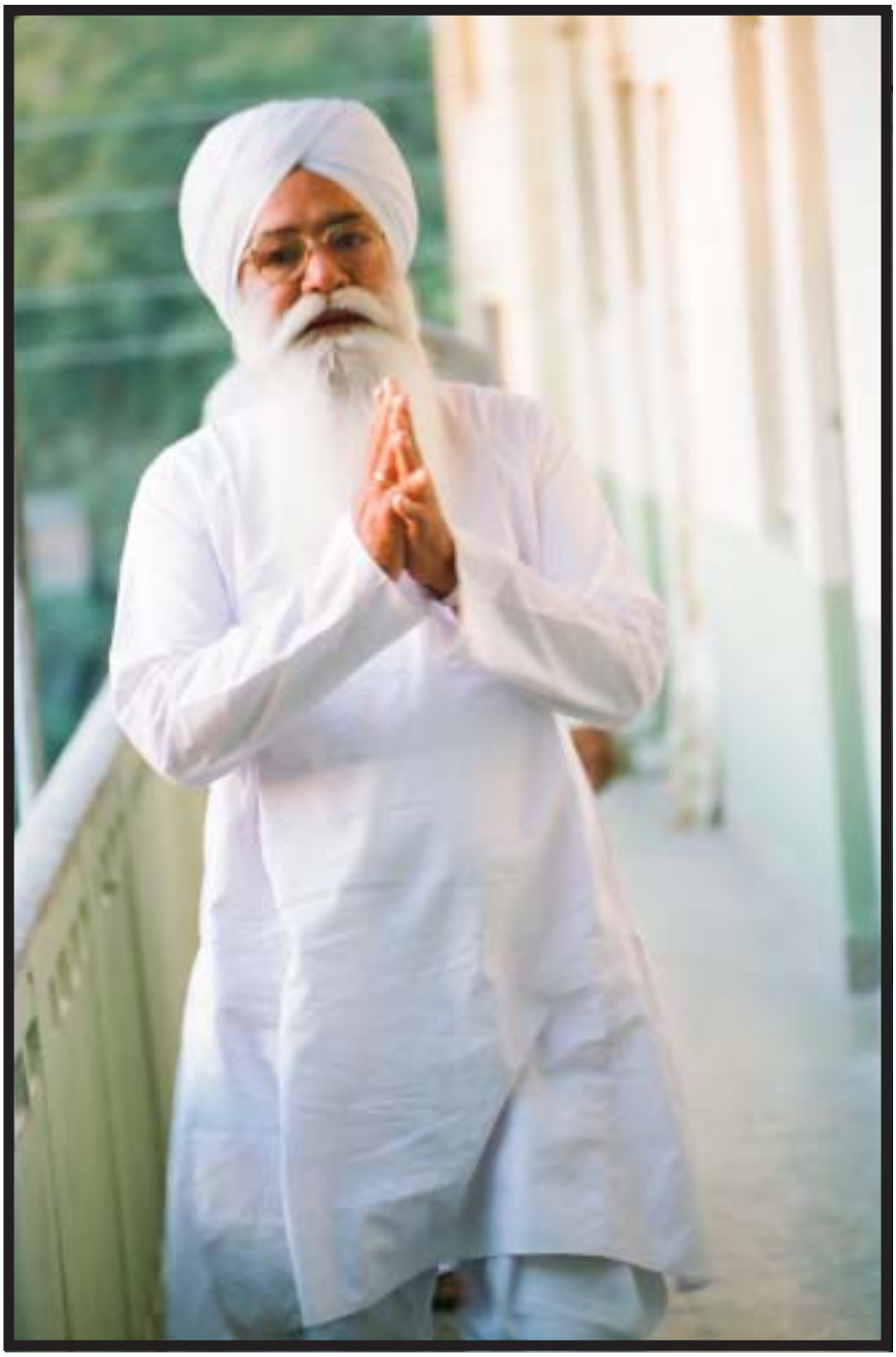

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से

दोष

अगर हम यह सोच लें कि मौत निश्चित है तो हमारी जिंदगी में परिवर्तन आ जाएगा। हमें भजन-सिमरन करना चाहिए अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा मन दूसरों के बारे में सोचेगा और दूसरों में **दोष** ढूंढेगा। जब हम दूसरों में दोष ढूढ़ते हैं तो उनकी बुराईयाँ हमारे अंदर आ जाती हैं; आप जैसा सोचेंगे वैसे ही बन जाएंगे।

परमात्मा कहता है, ''जो मुझे और लोगों में देखता है वही मेरा सबसे प्यारा बच्चा है।'' आपको सबके साथ मीठा बोलना चाहिए। आपकी किसी भी बात से किसी का दिल नहीं दुखना चाहिए अगर आप परमात्मा से प्यार करना चाहते हैं तो दूसरों की निन्दा न करें क्योंकि उनमें भी परमात्मा रहता है।

अगर आपको किसी ऐसे आदमी का सामना करना पड़े जिसमें बहुत सी बुराईयां हैं तो आप उससे किनारा कर लें। आप दूसरों में **दोष** ढूंढने की बजाय अपने आपमें **दोष** ढूंढे। दूसरों में दोष ढूढंने वाले आप कौन होते हैं? परमात्मा को पाना आसान है लेकिन अपने आपको सुधारना बहुत मुश्किल है। परमात्मा सबमें है तो क्या आप किसी को चोट पहुँचाएंगे? आपको अपने दोष त्याग देने चाहिए इसलिए मैं सभी नामलेवाओं को डायरी रखने के लिए कहता हूँ।

अगर कोई आदमी दूसरे लोगों को नुकसान पहुँचाने की बुरी आदत को नहीं छोड़ता तो आप दूसरों की मदद करने की अपनी प्यारी आदत को क्यों छोड़ते हैं? अगर आपको किसी का निरीक्षण भी करना पड़े तो आप उसके अच्छे गुणों को देखें, **दोष** तो सबमें होते हैं। परमात्मा ने हमें यह जुबान उसे याद करने के लिए दी है न कि दूसरों के दिल को ठेस पहुँचाने के लिए। ©©©